मेरी हिंदी किताब

छठी कक्षा के लिए

(तृतीय भाषा)

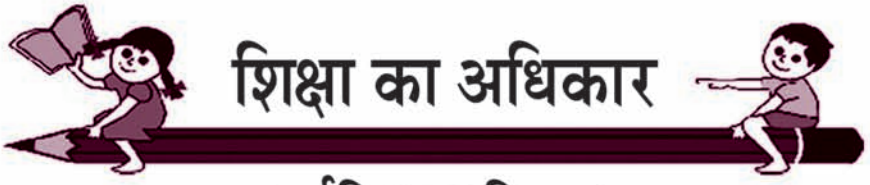

सर्वशिक्षा अभियान

सब पढ़ें सब बढ़ें

शिक्षक शिक्षा निर्देशालय तथा राज्य शैक्षिक
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ,
ओड़िशा, भुवनेश्वर

ओड़िशा प्राथमिक शिक्षा
कार्यक्रम प्राधिकरण,
भुवनेश्वर

मेरी हिंदी किताब

छठी कक्षा के लिए
(तृतीय भाषा)

पाठ्य-पुस्तक निर्माण समिति

प्रो. डॉ. राधाकान्त मिश्र, अध्यक्ष

डॉ. स्मरप्रिया मिश्र

डॉ. रवीन्द्र नाथ मिश्र

डॉ. स्नेहलता दास (प्रभारी)

संयोजना :

डॉ. प्रीतिलता जेना

डॉ. तिलोत्तमा सेनापति

प्रकाशक :

विद्यालय और गणशिक्षा विभाग,

ओड़िशा सरकार

संस्करण : २०१०

: २०१६

मुद्रण : पाठ्य पुस्तक उत्पादन और विक्रय, भुवनेश्वर

प्रस्तुति :

शिक्षक शिक्षा निर्देशालय तथा

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद

ओड़िशा, भुवनेश्वर

ଶିକ୍ଷା ଅଧିକାର

ସର୍ବଶିକ୍ଷା ଅଭିଯାନ

ସଭିଏଁ ପଢ଼ନ୍ତୁ, ସଭିଏଁ ବଢ଼ନ୍ତୁ

ଜଗତମାତାଙ୍କର ଚରଣରେ ଅଦ୍ୟାବଧି ମୁଁ ଯେଉଁ ଯେଉଁ ଭେଟି ଦେଉଅଛି,ସେଗୁଡ଼ିକ ମଧ୍ୟରେ ମୌଳିକ ଶିକ୍ଷା ମୋତେ ସବୁଠାରୁ ଅଧିକ କ୍ରାନ୍ତିକାରୀ ଓ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ମନେ ହେଉଛି । ଏହାଠାରୁ ଅଧିକ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ଓ ମୂଲ୍ୟବାନ ଭେଟି ମୁଁ ଯେ ଜଗତ ସମ୍ମୁଖରେ ଥୋଇପାରିବି, ତାହା ମୋର ପ୍ରତ୍ୟୟ ହେଉନାହିଁ । ଏଥିରେ ରହିଛି ମୋର ସମଗ୍ର ରଚନାତ୍ମକ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମକୁ ପ୍ରୟୋଗାତ୍ମକ କରିବାର ଚାବିକାଠି । ଯେଉଁ ନୂଆ ଦୁନିଆ ପାଇଁ ମୁଁ ଛଟପଟ ହେଉଛି, ତାହା ଏହିଥିରୁ ହିଁ ଉଦ୍ଭବ ହୋଇପାରିବ । ଏହା ମୋର ଅନ୍ତିମ ଅଭିଳାଷ କହିଲେ ଚଳେ ।

ମହାତ୍ମା ଗାନ୍ଧି

ଭାରତର ସମ୍ବିଧାନ

ପ୍ରସ୍ତାବନା

ଆମ୍ଭେ ଭାରତବାସୀ ଭାରତକୁ ଏକ ସାର୍ବଭୌମ, ସମାଜବାଦୀ, ଧର୍ମ ନିରପେକ୍ଷ, ଗଣତାନ୍ତ୍ରିକ ସାଧାରଣତନ୍ତ୍ର ରୂପେ ଗଠନ କରିବା ପାଇଁ ଦୃଢ଼ ସଂକଳ୍ପ ନେଇ ଓ ଏହାର ନାଗରିକଙ୍କୁ

- ସାମାଜିକ, ଅର୍ଥନୈତିକ ଓ ରାଜନୈତିକ ନ୍ୟାୟ ;
- ଚିନ୍ତା, ଅଭିବ୍ୟକ୍ତି, ପ୍ରତ୍ୟୟ, ଧର୍ମୀୟ ବିଶ୍ୱାସ ଏବଂ ଉପାସନାର ସ୍ୱତନ୍ତ୍ରତା ;
- ସ୍ଥିତି ଓ ସୁବିଧା ସୁଯୋଗର ସମାନତାର ସୁରକ୍ଷା ପ୍ରଦାନ କରିବାକୁ ତଥା ;
- ବ୍ୟକ୍ତି ମର୍ଯ୍ୟାଦା ଏବଂ ରାଷ୍ଟ୍ରର ଐକ୍ୟ ଓ ସଂହତି ନିଶ୍ଚିତ କରି ସେମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ଭ୍ରାତୃଭାବ ଉତ୍ସାହିତ କରିବାକୁ

ଏହି ୧୯୪୯ ମସିହା ନଭେମ୍ବର ୨୬ ତାରିଖ ଦିନ ଆମର ସଂବିଧାନ ପ୍ରଣୟନ ସଭାରେ ଏତଦ୍ଦ୍ୱାରା ଏହି ସଂବିଧାନକୁ ଗ୍ରହଣ ଓ ପ୍ରଣୟନ କରୁଅଛୁ ଏବଂ ଆମ ନିଜକୁ ଅର୍ପଣ କରୁଅଛୁ।

राष्ट्रीय गान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे, भारत भाग्य विधाता।

पंजाब, सिन्ध, गुजरात, मराठा, द्राविड़ उत्कल बंग।

विन्ध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा, उच्छल जलधि तरंग।

तव शुभ नामे जागे,

तव शुभ आशिष माँगे,

गाहे तव जय गाथा।

जन-गण-मंगलदायक जय हे, भारत भाग्य विधाता।

जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय हे।

आइए, ऐसा करें :

इस **नए** पाठ्यक्रम में कई तब्दिलियाँ की गई हैं। पहली है दृष्टिकोण में भिन्नता। अब शिक्षक शिक्षा प्रदान करने की तुलना में विद्यार्थी द्वारा स्वयं सीखने के प्रयास पर जोर दें। भाषण कम करें। विद्यार्थियों को बोलने का मौका दें। उदाहरणार्थ–स्वयं गद्य / पद्य का आदर्श वाचन कर दें, फिर विद्यार्थियों द्वारा उस कार्य को करायें। लेखन-शैली बता दें, फिर **लिखवाएँ**। वाद-विवाद, तर्कसभा, नाटकीय संवाद आदि अधिक **करवाएँ**। लघु निबंध, छोटे-छोटे अनुच्छेद-लेखन, पत्र, आवेदन पत्र, सरकारी दफ्तरों में प्रचलित पत्र आदि पर अभ्यास कराए जाएँ।

दूसरी बात है–भाषा-शिक्षण पर अधिक बल देना है। इसलिए हर पाठ के उपरांत लंबी अनुशीलनियाँ दी गई हैं। उनके आधार पर शिक्षक अपनी तरफ से भी नयी प्रश्न-शैलियों का प्रयोग कर सकते हैं और विद्यार्थियों द्वारा अभ्यास करवा सकते हैं। फिर साहित्य पर ध्यान दें । इससे बच्चों की रुचि परिमार्जित होती है और मानवीय - वृत्तियों का पोषण-पल्लवन होता है।

तीसरी बात है- मूल्यांकन-शैली में परिवर्तन। विद्यार्थियों के मस्तिष्क से परीक्षा का भय दूर किया **जाए**। पाठ को रटने की अपेक्षा सृजनात्मक, व्यक्तिगत लेखन अधिक महत्व रखता है। साल में दो-एक परीक्षा के महत्व को कम करके तात्कलिक / सावधिक परीक्षाएँ अधिक संख्या में हों। सबका मूल्यांकन अंतिम परिणाम में प्रतिफलित हो।

शिक्षकों से अनुरोध है कि वे पाठ्यपुस्तक को पहले देख लें, इसके दृष्टिकोण, कर्म, कार्य-शैली का अनुध्यान करके अपनी शिक्षा-शैली बनायें। शिक्षक तथा विद्यार्थियों की सक्रियता से भाषा- शिक्षण सरस होता है।

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा है। इसे सीखना प्रत्येक नागरिक का सांविधानिक कर्तव्य है। यह सारे देश के जन-जन में योगसूत्र स्थापित करने की भाषा है। इसे सीखने में रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट आदि आधुनिक माध्यमों का भी उपयोग किया **जाए**। क्योंकि ये शिक्षण के सरल और सशक्त साधन हैं। यह पाठ्यपुस्तक इन सभी का आधार प्रस्तुत करती है।

तीसरी भाषा हिंदी का प्रारंभ इस पुस्तक से होता है । इसलिए वर्णमाला, गिनती, संयुक्ताक्षर आदि सिखाने की व्यवस्था है। छोटे-छोटे वाक्य बोलने-लिखने में विद्यार्थी सक्षम हो जाएँ, यह इस कक्षा का लक्ष्य है। वे सुनकर भाषा को समझ लें, गाना गा सकें–इस पर ध्यान देना है। शिक्षकों की सहायता से यह कार्य आसानी से पूरा हो सकेगा।

शिक्षकों, अभिभावकों के सहयोग और साधनों के उपयोग से हिन्दी भाषा का अध्ययन काफी सरस हो सकता है।

पाठ्य-पुस्तक निर्माण समिति

विषय - सूची

क्र.नं	विषय	पृष्ठ
1.	ईश- वंदना (कविता)	1
2.	वर्णमाला	2
3.	मात्राएँ	3
4.	देखिए और पढ़िए	4
5.	आइए ऐसे लिखे	5
6.	संयुक्त वर्ण	8
7.	गिनती	10
8.	सप्ताह और साल (चित्र)	11
9.	हमारा देश (कविता)	12
10.	चित्र देखकर बताइए	16
11.	हमारे फल (चित्र)	18
12.	हमारे फूल (चित्र)	19
13.	हमारी सब्जियाँ (चित्र)	20
14.	चूहो ! म्याऊँ सो रही है (कविता)	21
15.	हम क्या-क्या खाते हैं (चित्र)	26

क्र.नं	विषय	पृष्ठ
16.	मैं बड़ा हो रहा हूँ (गद्य)	27
17.	चंदामामा (गद्य)	32
18.	हमारे वाहन (चित्र)	38
19.	वर्षारानी (कविता)	39
20.	वीर सुरेन्द्रसाय (गद्य)	42
21.	हम भी ऐसे खेल खेलते हैं (चित्र)	49
22.	चित्र देखकर कहानियाँ बनाइए (चार कहानियाँ)	50
23.	सच्चा मित्र (गद्य)	51
24.	हमारे पशु (चित्र)	57
25.	हमारे पक्षी (चित्र)	58
26.	रंग कितने	59
27.	कौन-क्या है ?	60
28.	चित्र बनाइए और रंग भरिए	61